मधुबन ओम् शान्ति अंक 269 दिसम्बर 2014

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(9-11-14)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, अपने रीयल और रॉयल संस्कारों द्वारा सर्व की विशेषताओं का वर्णन करने वाले, तिलक, ताज और तख्तधारी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के हमारे अति लक्की, लवली बापदादा के दिलतख्त पर विराजमान सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर यादप्यार स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - प्यारे अव्यक्त बापदादा से मंगल मिलन मनाने के यह खुशियों भरे सुहावने दिन सबको उमंग-उत्साह से भरपूर कर उड़ती कला का अनुभव करा रहे हैं। देश विदेश के हजारों भाई बहिनें जब शान्तिवन में पहुंचते हैं तो यहाँ की रंगत कितनी न्यारी प्यारी होती है। चारों ओर के भाई बहिनें प्रभु मिलन का अलौकिक आनंद लेने, वरदानों से अपनी झोली भरने पहुंच जाते हैं। बाबा भी अपनी स्नेहभरी वरदानी नज़र से सबको निहाल कर सर्व शक्तियों से सम्पन्न कर देते हैं। हर एक के दिल से निकलता वाह बाबा वाह! कमाल है मीठे प्यारे बाबा की जो थोड़े ही समय में सब बच्चों को मालामाल कर देते हैं। संगमयुग पर मीठे बाबा ने जैसे सेवा की है, मेरी भी यही भावना है हम भी ऐसे ही करते रहें। इसके लिए सिर्फ एक दो में ट्रस्ट (विश्वास) चाहिए। आपस में सच्चाई और प्रेम का व्यवहार हो। एक ने कही दूसरे ने मानी शिवबाबा कहे दोनों हैं ज्ञानी। हमारी कारोबार इतनी रूहानियत वाली हो, आपस में इतना रूहानी प्रेम हो जो विश्व को वायब्रेशन मिलता रहे। हमारी तो बाबा के हर बच्चे प्रति यही भावना है कि हर एक पुरुषार्थ में नम्बरवन आये। किसी भी देहधारी के साथ थोड़ा भी लगाव झुकाव व ग्लानि न हो तब हर पल बाबा के साथ रहने का भाग्य अनुभव होगा। हर एक बाबा के बच्चे में पवित्रता 100 परसेन्ट हो, अपवित्र, अशुद्ध, व्यर्थ संकल्प का नामनिशान न हो। ऐसी पवित्रता है तो सत्यता है, जैसे बाप सत्य है, पढ़ाई सत्य है, ऐसे हमें सत्य स्वरूप में रहना है। जिसमें जितनी सत्यता होगी उतनी आकर्षण होगी। सत्यता के साथ व्यवहार में नम्रता हो, जीवन में गम्भीरता हो, बोलने में मधुरता हो, तो यह पांचों बातें लाइफ को लाइट बना देती हैं, बाबा से माइट मिलने लगती है। लाइफ में लाइट हैं माना हल्के हैं, बाबा से माइट मिल रही है तो एवरीथिंग राइट होगा। अभी इस बात का हर एक अनुभव करो। पुरुषार्थ माना ही अटेन्शन, कोई भी बात का टेन्शन न हो। अपनी जीवन को इतना ऊंच क्वालिटी वाला बना दो। इसके लिए जितना हो सके साइलेन्स में रहने का अभ्यास चाहिए। पुरुषार्थ कोई बड़ी बात नहीं है सिर्फ लगन हो, समय की वैल्यु हो। कोई भी व्यर्थ बातों का चिंतन न हो तो बाबा बहुत मदद करता है। बाबा को ऐसे बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं। हमारी चाल चलन, बोल-चाल बताये कि यह कितने रॉयल, कितने रीयल हैं। तो बोलो, हमारे मीठे मीठे भाई बहिनें ऐसी श्रेष्ठ स्थिति का अनुभव करते, उड़ती कला में उड़ रहे हो ना। मुख से भले किसी को बाबा का परिचय नहीं दो, लेकिन किसी को कोई प्रकार का दु:ख हो तो आपको देखकर उसका दु:ख चला जाये। अब ऐसा कोई प्लैन प्रोग्राम बनाओ जो हमारा बाबा कौन है, कैसा है, उसका सबको साक्षात्कार हो जाए। साइंस के साधन विश्व को मैसेज पहुंचाने में अच्छी मदद कर रहे हैं, हमें सिर्फ साइलेन्स की शक्ति से फरिश्ता बनने का काम तीव्रगति से करना है। अब ऐसा लक्ष्य रख हर एक रेस करो और नम्बरवन ले लो। ऐसी मेरी शुभ भावना है। अच्छा -

सबको बहुत-बहुत दिल से स्नेह भरी याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

स्वमान में रहो और सर्व को सम्मान दो

1) अपने प्राप्त हुए स्वमान के सम्मान में रहो और दूसरों को भी सम्मान से देखो। जैसे बाप सर्व बच्चों को सम्मान देते हैं तो विश्व की सर्व आत्माओं द्वारा सम्मान मिलता है। देवता अर्थात् देने वाला। अगर इस जन्म में सम्मान नहीं दिया तो देवता कैसे बनेंगे! अनेक जन्मों में सम्मान कैसे प्राप्त करेंगे?

2) ब्रह्मा बाप ने सदा बच्चों को मालेकम् सलाम कर स्वयं को बच्चों का सर्वेन्ट कहलाया। छोटे बच्चों को भी सम्मान का स्नेह दिया, होवनहार विश्वकल्याणकारी रूप से देखा। कुमारियों वा कुमारों को, युवा स्थिति वालों को सदा विश्व की नामीग्रामी महान् आत्माओं को चैलेंज करने वाले, असम्भव को सम्भव करने वाले, महात्माओं के सिर झुकाने वाले - ऐसे पवित्र आत्माओं के सम्मान से देखा। सर्व को स्वमान और सम्मान दिया, ऐसे फॉलो फादर।

3) ब्रह्मा बाप ने कभी ऐसे नहीं सोचा कि यह सम्मान देवे तो मैं सम्मान दूँ। सम्मान देने वाले निंदक को भी अपना मित्र समझा। गाली देने वाले को भी अपना समझ स्नेह दिया। सारी दुनिया ही अपना परिवार है। सर्व आत्माओं का तना आप ब्राह्मण हो। यह सारी शाखाएं अर्थात् भिन्न-भिन्न धर्म की आत्माएं भी मूल तना से निकली हैं। तो सभी अपने हुए ना। ऐसे स्वमानधारी बन अपने को मास्टर रचयिता समझ सर्व को सम्मान देते चलो।

4) अभी शिक्षा देने का समय चला गया। अभी स्नेह दो, सम्मान दो, क्षमा करो। शुभ भावना रखो, शुभ कामना रखो, यही शिक्षा की विधि है। इस नई विधि से सभी को समीप लाओ। जितना एक दो को सम्मान देंगे उतना ही सारी विश्व आपका सम्मान करेगी, सम्मान देने से सम्मान मिलेगा।

5) स्वमान में रहो तो देह अभिमान समाप्त हो जायेगा। साथ-साथ जो स्वमान में स्थित होता है उनको स्वत: ही सर्व का मान मिलता है। अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित रह सर्व को सम्मान दो तो सर्व के सत्कारी बन जायेंगे। छोटा, बड़ा, महारथी व प्यादा सर्व को सत्कार की नज़र से देखो।

6) जो बाप की महिमा है वही आपका स्वमान है। जब आप अपने स्वमान में स्थित होंगे तो किसी भी प्रकार का अभिमान चाहे देह का, बुद्धि का, नाम का, सेवा का वा विशेष गुणों का अभिमान स्वत: समाप्त हो जायेगा और अभिमान समाप्त होने से विघ्न-विनाशक बन जायेंगे।

7) स्वमान में स्थित होने वाला सदा निर्माण रहता है, इससे सर्व द्वारा स्वत: ही सदा मान मिलता है। सम्मान देने से, स्वमान में स्थित होने से, प्रकृति दासी के समान, स्वमान के अधिकार के रूप में मान प्राप्त होता है। मान के त्याग में सर्व के माननीय बनने का भाग्य प्राप्त होता है। स्वमान में स्थित हो, निर्माण बन, सम्मान देना ही लेना बन जाता है। सम्मान देना अर्थात् उस आत्मा को उमंग-उल्हास में लाकर आगे करना है।

8) लौकिक रूप में भी कोई पुण्य का काम करता है तो सबके आगे माननीय होता है लेकिन इस समय के श्रेष्ठ पुण्य का फल– पूज्यनीय और माननीय दोनों बनते हो। तो अपने आप से पूछो, ऐसे पुण्यात्मा बन सदैव पुण्य का कार्य करते हैं? या संकल्प आता कि मेरा सम्मान क्यों नहीं रखा जाता, मुझे सभी सम्मान क्यों नहीं देते.. यह लेने की भावना रॉयल बेगरपन अर्थात् भिखारीपन है।

9) जैसे कोई बड़ा ऑफिसर वा राजा जब अपने स्वमान की सीट पर स्थित होता है तो दूसरे भी उसे सम्मान देते हैं। अगर स्वयं सीट पर नहीं है तो उसका ऑर्डर कोई नहीं मानता। ऐसे ही जब तक आप अपने स्वमान की सीट पर नहीं तो माया भी आपके आगे सरेन्डर नहीं हो सकती। स्वमानधारी बच्चों का ही सारा कल्प सम्मान होता है। एक जन्म स्वमानधारी, सारा कल्प सम्मानधारी।

10) ऐसे स्वमान में रहने वाले बच्चों का बाप भी सम्मान रखते हैं। बाप बच्चों को सदा अपने से भी आगे रखते हैं। सदा बच्चों के गुणों का गायन करते हैं। हर रोज़ सिक व प्रेम से यादप्यार देने के लिए परमधाम से साकार वतन में आते हैं। वहाँ से भेजते नहीं लेकिन आकर देते हैं। इतना श्रेष्ठ सम्मान और कोई दे नहीं सकता। स्वयं बाप ने सम्मान दिया है, इसलिए अविनाशी सम्मान के अधिकारी बने हो।

11) ब्राह्मण जीवन में जितने ब्राह्मणों का आपके प्रति स्नेह, सम्मान अर्थात् रिगार्ड होगा, दिल से सन्तुष्ट होंगे, उतना ही आप पूज्य बनेंगे। पूज्य के लिए स्नेह और सम्मान होता है। तो जब जड़ चित्रों की पूजा होगी तब इतना ही स्नेह और रिगार्ड मिलेगा। सारे कल्प की प्रारब्ध अभी बनानी है।

12) संगठन में स्नेह वा दुआयें लेने के लिए बालक सो मालिक का पाठ पक्का कर एक दो को आगे बढ़ाते हुए, एक दो के विचारों को भी सम्मान देते हुए आगे बढ़ते रहो तो सफलता ही सफलता है। जहाँ नि:स्वार्थ स्नेह है वहाँ सम्मान देंगे भी और लेंगे

भी। दाता बनकर सहयोग दो। बातें नहीं देखो, स्वमान में रहो और सम्मान देकर एक दो के सहयोगी बनो।

13) किसी भी आत्मा को अगर आप दिल से सम्मान देते हो, कमजोर आत्मा को उमंग-उत्साह में लाते हो तो यह बहुत बड़ा पुण्य है! गिरे हुए को गिराना नहीं है, गले लगाना है अर्थात् सहयोग देकर बाप समान बनाना है। समर्थ बन समर्थ बनाना है। जो कमजोर आत्मा है ही कमजोर, उसकी कमजोरी को न देख सहयोग दो तो दुआयें मिलेंगी। दुआयें दो, दुआयें लो। सम्मान दो और महिमा योग्य बनो।

14) स्वयं भी सदा स्वमान में रहो, औरों को भी स्वमान से देखो। स्वमान से देखेंगे तो फिर जो कोई भी बातें होती हैं, जो आपको पसन्द नहीं हैं, उस पर नज़र नहीं जायेगी क्योंकि हर एक विशेष आत्मा, बाप की पालना लेने वाली ब्राह्मण आत्मा है।

15) वेस्ट को खत्म करने के लिए अमृतवेले से लेके रात तक ''स्वमान और सम्मान'' यह दो शब्द प्रैक्टिकल में लाओ। कोई कैसा भी है, हमें सम्मान देना है। सम्मान देना, स्वमान में स्थित होना, दोनों का बैलेन्स चाहिए। ऐसे नहीं कि कोई सम्मान दें तो मैं सम्मान दूं, नहीं। मुझे दाता बनना है। हम दाता के बच्चे दाता हैं। वह दे तो मैं दूं, यह तो बिजनेस हो गया, दाता नहीं हुआ।

16) जैसे बाप की दृष्टि वा वृत्ति में हर बच्चे के लिए स्वमान है, सम्मान है, ऐसे ही अपनी दृष्टि वृत्ति में स्वमान और सम्मान। सम्मान देने से जो मन में आता है कि यह बदल जाये, यह नहीं करे, यह ऐसा हो, वह शिक्षा से नहीं होगा लेकिन सम्मान दो तो जो मन में संकल्प रहता है, यह हो, यह बदले, यह ऐसा करे, वह करने लग जायेंगे। वृत्ति से बदलेंगे, बोलने से नहीं।

17) आत्मिक प्यार की निशानी है - दूसरे की कमी को अपनी शुभ भावना, शुभ कामना से परिवर्तन करना। सम्मान देने में, स्वमान में रहने में एक्जैम्पुल बनो, नम्बर ले लो। स्व स्थिति सदा विजयी रहे, उसका साधन है - सदा स्वमान और सम्मान का बैलेन्स।

18) जैसे ब्रह्मा बाप ने आदि देव होते हुए, ड्रामा की फर्स्ट आत्मा होते हुए भी सदा बच्चों को सम्मान दिया। अपने से भी ज्यादा बच्चों का मान आत्माओं द्वारा दिलाया इसलिए हर एक बच्चे के दिल में ब्रह्मा बाप माननीय बनें। तो सम्मान देना अर्थात् दूसरे के दिल में दिल के स्नेह का बीज बोना। तो वर्तमान समय की आवश्यकता है एक दो को सम्मान देने की और अपने ऊंचे स्वमान में रहने की।

शिवबाबा याद है ? 17-3-13 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

''किसी को मित्र, किसी को शत्रु मानना यह भी देह अभिमान है, निर्भय रहना है तो निर्वैर बनो''

(दादी जानकी)

बाबा हमारे से क्या चाहता है? मेरे बच्चे सम्पूर्ण बनें। पहले सर्व गुणों में सम्पन्न फिर सम्पूर्णता, कोई कमी न हो। चारों सबजेक्ट बहुत अच्छे हैं, ज्ञान, योग, धारणा, सेवा नम्बरवार हैं। योग का ज्ञान मिला है, धारणा का भी ज्ञान मिला है। चेकिंग के साथ अटेन्शन रखो, औरों को नहीं देखो। और कैसे हैं, यह देखेंगे तो टेन्शन हो जायेगा। हम कैसे हैं? भले सब नम्बरवन में जायें पर मुझे नम्बर टू में नहीं जाना है। छुट्टी है, ईसके लिए कोई मना नहीं करता है। संगमयुग में जब से बाबा के बनें तब से स्वयं को देखें फिर बाबा को देखें और समय को भी देखें, तो इस समय का बहुत फायदा ले सकते हैं।

दुनिया में सबको डर है, जब कोई गलत काम करते हैं तो डर लगता है या कुछ गलती देखते हैं तो वो भी मेरी गलती देखते हैं तो डर लगता है। मैंने किसी की गलती देखी तो और भी मेरी गलती देखेंगे। बाबा ने हमको निर्भय बना दिया है, पहले निर्वैर, किसी से द्वेष भाव नहीं तो निर्भय हैं। पहले अपना मित्र आप बनें यानि बाबा ने ज्ञान समझाया, योग सिखाया, धारणा पर ध्यान खिंचवाया, सेवा में समय सफल किया। जो बाबा से प्राप्ति, पालना हुई वह शेयर करते हैं, केयर करते हैं, इन्सपायर करते हैं। थोड़ा भी खराब संकल्प है तो इम्प्युअर है, उसको डर लगेगा। अपना दुश्मन आपेही बना इसीलिए मैं अपने को पदमापदम भाग्यशाली समझती हूँ, हर कदम में हर संकल्प में नेचुरल मैं कौन, मेरा कौन, मुझे क्या करने का है.... यह बहुत याद रहता है।

मैं कौन तो अन्तर्मुखी, मेरा कौन तो बुद्धि ऊपर चली गई। मन, वाणी, कर्म पर अटेन्शन हो उसके लिए बाबा ने नियम, मर्यादा, सभ्यता जो बताई है वह सदा स्मृति में है। साकार में हम बहन भाई हैं, आत्मा रूप में भाई भाई हैं। दृष्टि में न किसी के लिए

घृणा, न किसी के लिए विशेष स्नेह। यह अच्छा है, बाकी यह अच्छा नहीं है, तो यह कितना बड़ा पाप है। ऐसों को कभी यह स्मृति नहीं रह सकती है कि मैं कौन? मेरा कौन? एक मिनट साइलेंस में रह सच्ची दिल से अपने से पूछो। जरा भी किसी को मित्र, किसी को शत्रु मानना, अभी भी जरा सा देह-अभिमान है, बाबा की याद नहीं है। बाबा ऊपर रहता है, यहाँ आता है हमको ऊपर ले जाने के लिए। तो बार-बार बाबा की तरफ ही बुद्धि खींचनी चाहिए इसके लिए और किसी के परिचय की जरुरत नहीं है। बाबा अपना इतना अच्छा परिचय खुद ही देता है इसलिए धर्म, जाति, रंग, भाषा से बुद्धि पार हो। ऐसी स्थिति हो तो औरों को भी यह सच्चाई और प्रेम के वायब्रेशन मिलें। यही सेवा है। इसी सेवा का परिणाम है जो आप इतने सब यहाँ बैठे हो। कहाँ-कहाँ से कितने देशों से आये हो। दुनिया में सच्चाई और प्रेम का देवाला है, झूठ और वैर भाव दुनिया में बहुत है। किसी के लिए प्रेम, किसी के लिए न प्रेम, ऐसा तो अन्दर नहीं है! बाबा ने सबको प्रेम से देख करके पावन बनाया है। जैसे बाबा ने हम सबको पावन बनाया है, क्या से क्या बन गये हैं और खुशी में नाच रहे हैं, ऐसे हमें अब औरों को बनाना है।

बाबा ने सिखाया है – जैसा अन्न वैसा मन। खाओ तो क्या खाओ, पहनो तो क्या पहनो। कोई फैशन नहीं। अमृतवेले 4 बजे से लेके रात तक पूरा दिनचर्या बनाकर दी है। तो चेक करो, सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की स्थिति तक आये हैं और कोई बात नहीं, यह बात... वह बात... नमस्ते। न सुनना है, न सुनाना है इसलिए मैं फ्री हूँ। क्या सुनूँ, कोई बात है ही नहीं, तुम बात बतायेंगी लेकिन मैं सुनेंगी ही नहीं तो किसको सुनायेंगी क्योंकि सुनेंगी तो इक्ट्ठी करके फिर सुनायेंगी, एक सुनायेगी फिर दूसरी सुनायेगी इसलिए पहली बार ही नहीं सुनो। कहो टाइम नहीं है। यह समय ही मुझे सम्पूर्ण सम्पन्न बनायेगा। भले बनाने वाला बाबा है यह पक्का है, बाबा के बिगर कोई नहीं बनाता है। बाबा कैसे बनाता है, समय अनुसार पहचान दे रहा है इसलिए कान खोलके बाबा की सुनाई हुई बेहद बातें ही सुनो और बातों के लिए कान बन्द करो। मुझे अच्छा लगता है हियर नो इविल, सी नो इविल...। इविल माना जरा भी गलत बात नहीं, उसको फियर नहीं होगा और अगर जरा भी सुनेगा, बोलेगा, देखेगा तो फियर होगा, टियर्स (आँखों से आँसू) आयेंगे। फियर नहीं है तो चियरफुल है। फियर तो टियर (रोना), नो फियर तो चियरफुल। इज़ी है ना! हम बिजी नहीं हैं पर समय और संकल्प सफल हो रहे हैं, समय और संकल्प की बहुत वैल्यु है।

बाबा ने जो ज्ञान दिया है वह विश्व को देने के लिए दिया है, पहले समझा मेरे को दिया है। जब भारत में सुनाया तो भारतवासियों के लिए दिया है, जब विश्व को सुनाया तो लगा यह तो हर आत्मा के लिए है। अपने विचारों को शुद्ध श्रेष्ठ बनाना, समझदार का काम है। समझदार माना शुद्ध, श्रेष्ठ, दृढ़। ड्रामा कहता है हो जायेगा, बाबा कहता है मैं कराऊंगा और हम बच्चे कहते मुझे करना है। ऐसे अच्छे-अच्छे शब्द अन्दर तीर के समान लगे हुए हैं, वह औरों को सुनाते हैं तो फिर भूलते नहीं हैं। अगर मैंने अच्छी तरह से जीवन में नहीं लाया है, तो भले सुनाओ पर वो भूल जायेंगे इसलिए याद में रहना माना अच्छी तरह से बाबा की सारी नॉलेज को धारण कर नॉलेजफुल पॉवरफुल बनना। नॉलेज से पॉवर मिलती है, पॉवर धारणा से होती है, सेवा से सफलता होती है इसलिए सिर्फ सेवा को देख खुश नहीं होना है। परन्तु किसी को अच्छा महसूस कराना, अनुभव कराना .. यह है सच्ची सेवा। ऐसी सेवा हो तो तन और मन अच्छा बन जायेगा। धन भी अच्छी तरह यूज़ होगा। सम्बन्धों में भी समस्या नहीं रहेगी। तो मन को ठीक रखो। मैं हर एक से व्यक्तिगत बात कर रही हूँ। अच्छा। ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास

"जो बाबा कहता है उसे प्रैक्टिकल लाइफ में अमल करो तो योग सहज लग जायेगा"

(दादी जानकी)

अब घर जाना है तो जो भी बातें हैं, समाके समेट के जो कुछ करना है वो करके अपनी जीवन यात्रा सफल करना है। डोंट वरी, नो प्रॉब्लम..... आगे चलते जा रहे हैं, पीछे मुड़ करके नहीं देखा है। पीछे देखने से थोड़ा दर्द पड़ता है, बार-बार पीछे देखो, तो हमारा क्या हाल होगा? हमारा काम है, आगे बढ़ते जाना और बाबा के साथ जाना। बहुत दूर से किसी ने पत्र लिखा है, आपके साथ रहने से उपराम रहना इज़ी हो गया है। कर्म करते हुए बुद्धि ऊपर है ना, तो हर आत्मा का पार्ट न्यारा और हर एक पार्ट जो भी बीता है, न्यारा है, सेम होगा नहीं। अभी ड्रामा शब्द कहते हैं, पहले नाटक माना ना अटक कहते थे। ड्रामा है, बना बनाया है। बाबा साकार मुरली में बार-बार पक्का कराता है ड्रामा, स्वदर्शन चक्र धीरे-धीरे घुमाओ तो परदर्शन, परचिंतन

खत्म तो फ्री हो गये। तभी तो वतन की ओर जाने में अच्छा लग रहा है।

कभी नहीं कहना, कैसे चलूँ? बाबा कहता है ऐसे चलो, मैं ले जा रहा हूँ, तुम कहेंगे कैसे चलूँ? बाबा मेरे लिए खड़ा थोड़ेही रहेगा, बाबा कहता है ऐसे चलो। श्रीमत अच्छी स्पष्ट मुरली में समझाता है, पर मनमत पर चलने की दूसरे की परमत पर चलने की आदत है। श्रीमत क्या कहती है, उस पर चलने के लिए फ़ुर्सत नहीं है। अन्तर्मुखता से एकाग्रता की शक्ति बढ़ती है। एकांतप्रिय हो जाते, एक के अन्त में जाते। एक के हैं, एक हैं, एक ही बाबा है जो राजाओं का राजा बनाने के लिए पढ़ाता है। पुरुषार्थ क्या है! मोहब्बत है, मेहनत नहीं है। बाबा कहता है मेहनत नहीं करो। जो बीता वो याद नहीं करो, आज जो करेंगे ना, कल प्रालब्ध बन जायेगी। पर कल की बात याद करेंगे तो आज वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट ऑफ एनर्जी। यह टाइम बड़ा वैल्युबुल है। समय कहता है मुझे सफल करो। ज्ञानयुक्त सो योगयुक्त, फिर राज़युक्त सो युक्तियुक्त। ज्ञान कहता है स्वयं, समय और बाप.... 2-3 मिनट साइलेंस में रहो तो नो प्रॉब्लम। ज्ञान इतना अच्छा है, योग लग जाता है। आत्मा का स्वधर्म शान्त है, स्व कर्म, स्व देश, स्वरूप... इज़ी है। जो बाबा सुनाता है उसे अमल करने से, प्रैक्टिकल लाइफ में आने से बाबा की नेचुरल याद रहती है। याद करना नहीं पड़ता है। फिर बाबा जैसा बनाना चाहता है वह बन जाते हैं। मैं क्या करूँ, नेचर थोड़ी ऐसी है, यह किसने कहा? सूक्ष्म देह-अभिमान की अन्दर अंश है, तो पुरानी नेचर अच्छा समझके यूज़ करते हैं। लेकिन समझदार वो जिसकी पुरानी और पराई से प्रीत न हो। पराई चीज़ को अपना समझा तो चोर हो गया। जो बड़ी दिल वाले होते हैं, रहमदिल होते हैं, खूब सेवा करते हैं, देने में मजा आता है। जिसको जो जरुरत है दे देते हैं और उसका बढ़ता रहता है। तो सिम्पल बातें सहज बातें इज़ी हैं, बड़ी बात नहीं है हमको सैम्पल बनना है सिम्पल रह करके। अच्छा।

तीसरा क्लास

"धीरज का गुण मीठा बनाता है इसलिए कभी धीरज को नहीं छोड़ो, सन्तुष्ट रहना है तो समेटने की शक्ति धारण कर लो"

(दादी जानकी)

ओम् शान्ति शब्द शान्तिधाम की याद दिलाता है। शान्तिधाम हमारा घर है, शान्ति का सागर मेरा बाप है, मैं कौन हूँ? जो बाप का घर है वो मेरा घर है। कितनी खुशी है, बाप की खुशी है या घर की खुशी है? घर को याद करें या बाबा को याद करें? बाबा को याद करते हैं तो घर में याद करते हैं क्योंकि वो ऊपर रहता है ना। वो ऊपर वाला नीचे आके कहता है तुम मेरे को तो भूल गये पर घर को भी भूल गये थे, यह सृष्टि चक्र 5 हजार वर्ष का होता है, यह भी भूल गये थे। कितनी भूलें की, क्या-क्या भूलें की बाबा ने आकर रियलाइज़ कराया।

आगे बढ़ने में कहाँ रूकना नहीं है, न खुद रूकना, न औरों को रोकना, खुद चलना औरों को चलाने में मदद करना, मुझे क्या करने का है? मैं रूकूँगी तो मेरे कारण और भी रूकेंगे। इज़ी इशारा है ड्रामा की नॉलेज, बाबा की नॉलेज, स्वयं की नॉलेज.... स्वयं को बाबा का इशारा मिलता है अन्तर्मुखी बनो। अन्तर्मुखी बनने से बाबा खींचता है, उसकी जो खैंच है वो एवररेडी बनाती है। देह, सम्बन्धों के भान से जैसे बहुत दूर चले गये, यह जन्म ही हमारा पूरा हो गया। जिस माँ बाप ने जन्म दिया था वो मर गये, हम भी मरके बाबा के पास आ गये, तो अभी यही खून इस शरीर में काम करना चाहिए इसलिए कभी यह नहीं सोचना कि मेरी माँ को यह बीमारी थी इसीलिए मेरे को भी है, नहीं। अब इस जन्म में न मेरा कोई है, न मैं किसका हूँ। एवररेडी माना मुझे किसी का भी देखने, सुनने, सोचने या पीछे की बात सोचने का टाइम ही नहीं है क्योंकि टाइम को देखें, बाबा को देखें या स्वयं को देखें?

तो हरेक अभी समय अनुसार बाबा की याद में चमकता हुआ स्टार बने, बाबा ने हमारे में यह आश रखी है। बाबा की उम्मीदों से ही यह सब स्टार चमक रहे हैं। ऊपर गगन में देखूँ या यहाँ देखूँ! हम तो जहाँ बैठती हूँ वहाँ हरियाली दिखाई पड़ती है। ऐसी हमारी दृष्टि हो, जो रेत में भी हरियाली हो, पहाड़ में भी पानी निकल आये, ऐसी हमारी वृत्ति, दृष्टि महासुखकारी हो और सन्तुष्ट आत्मा बनना हो तो समेटने की शक्ति जरुर चाहिए। सब काम करके समेट लो। कईयों को फैलाने, विस्तार में जाने की बहुत आदत होती है, यह भी चाहिए, वह भी चाहिए इतना सामान इकट्ठा कर देते हैं बात मत पूछो। हम ऐसों के घर में भेजती हूँ इसके घर की सफाई करके आओ। उनके पास पता नहीं क्या-क्या कभी का कुछ भी रखा हुआ मिलेगा। हमारे कमरे में आके देखो जरा भी फालतू चीज़ें नहीं मिलेगी। आदि से आदत है यह। समय अनुसार फैलाना भी जरुरी है लेकिन फिर उसे समेट लिया तो वो बहुत अच्छा लगता है। जैसे 5 का खाना बनाओ या 50

का टाइम उतना ही लगता है, फैलाने में तो फैलायेंगे लेकिन फिर उसे समेटने में चिड़चिड़े हो जाते या थक जाते क्योंकि सोचते रोज़-रोज़ बार-बार यह कौन सफाई करेगा? नहीं, करते जाओ समेटते जाओ इसमें चाहिए रिफाइन बुद्धि। हर कर्म करते जैसे बाबा ने किया है, कराया है, ऐसे ही करते चलो तो दुनिया वाले हमारा मिसाल देंगे कि देखो, यह कैसे रहते हैं, कितने साफ-सुथरे रहते हैं?

कईयों को सुनना पड़ता है कहते हैं कि कौन तुम्हारे सफेद कपड़े रोज़ धोयेगा? हम तुम्हारे अकेले के लिए बिना प्याज़ के भोजन नहीं बना सकते हैं इसलिए तुम्हें यही खाना खाना पड़ेगा। बाबा ने कितना मन की शुद्धि, शुद्ध आहार, तन की सफाई से रहना सिखाया है। जो बाबा ने डायरेक्शन दिये हैं, जैसे डायरेक्शन दिये हैं वैसे ही करते जाओ तो जैसे बाबा वन्डरफुल है वैसे बन जायेंगे। तो चलते-फिरते, उठते-बैठते रूहानियत में रहना, ईश्वरीय स्नेह से मिलना। सारा दिन मुझे और कोई काम नहीं है पर मैं समझती हूँ जो मिलते होंगे, भले आये हैं आओ बैठो। स्वप्नों में भी यही हो बोलो आओ, बैठो। ऐसे नहीं टाइम नहीं है, ऐसे नहीं बोलो। तो धीरज धर मनुआ तेरे सुख के दिन आयेंगे। धीरज का गुण भी मीठा बनाता है। कभी भी धैर्यता को छोड़ा, अधैर्य हुआ तो खुश नहीं रहेंगे, मीठा नहीं बोलेंगे। सम्भालो अपने आपको, समय नाज़ुक है और हमारी जीवन अनेक आत्माओं का आधार है, सबका उद्धार करने के लिए है। किसी के लिए आधार, किसी के लिए उदाहरण, किसी के लिए उद्धारमूर्त, तीनों ही सेवा है ना। हर कदमों में पदमों की कमाई करनी हो तो बाबा ने यह तरीके सिखाये हैं।

हर संकल्प में, वाणी में, कर्म में, चलने में – एक अमृतवेला, दूसरा चलते-फिरते, नहाते-धोते, खाते-पीते बाबा को याद करना है। याद करने का टाइम बहुत है और छिप-छिपके बात करने का टाइम नहीं है। बाबा की जो श्रीमत है, उसी अनुसार एक्यूरेट चलना, यह दीदी से नेचुरल सीखने को मिलता था। दिल, दिमाग, दृष्टि से बोलो मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा। इतना सब खेल रचाया है, अपने आप सभी कुछ करके कराके अपने आपको छिपाया है और हमको भी कहता है तुम भी ऐसे बनो। करो कराओ पर छुपके रहो। दिखावे वाला पुरुषार्थ नहीं करो। जैसे बाबा का साक्षात्कार होता है ना, ऐसे साक्षात् बाप समान बनना हो तो आवाज़ परे रहो, निश्चिंत रहो। ओम् शान्ति।

14-8-14

"अपनी रग-रग में बाबा को समा लो तो विजय हुई पड़ी है"

(टीचर्स बहनों के साथ-दादी गुल्जार, दिल्ली ओ.आर.सी.)

आप सबको देखकर हमको हमारा आप जितना स्वरूप याद आ रहा है। हम जब आये थे बाबा के पास तो आप से भी छोटे आये थे। 9 साल की आयु में आये थे लेकिन बड़े होते होते आज आपके पास आ गये। सबके दिल में, मस्तक में, कौन दिखाई दे रहा है? मेरा बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा। कोई भी बात करो पहले बाबा की याद आती है। कोई भी फैंसला करना होता है तो पहले कौन याद आता है? मेरा बाबा। मेरा बनाया है ना! तो बाबा में भी जितना मेरापन लायेंगे उतना बाबा याद आयेगा। बाबा मेरा है। हरेक क्या कहेगा? मेरा बाबा। ये नहीं कहेगा बड़ी दादियों का है। मेरा बाबा है। जितना मेरापन होगा उतना याद सहज आयेगी। बाबा में मेरापन होगा तो आपेही याद आयेगा। बाबा द्वारा तो हमें सब कुछ मिला है। जीयदान किसने दिया है? बाबा ने। आपको ब्रह्माकुमारी बनाकर राज्य अधिकारी किसने बनाया? बाबा ने। भले टीचर्स भी सेवा करती हैं, लेकिन बनेगी किसकी? बाबा की। हरेक के दिल के अन्दर कौन बैठा है? मेरा बाबा। तो मेरापन जितना लायेंगे उतना भूलेगा नहीं। बाबा बाप भी है, टीचर भी है और सतगुरु भी है। बाबा के साथ सर्व सम्बन्ध हैं। किसी भी रूप में बाबा को याद कर सकते हो। बाबा ने क्या बनाया है? योग्य टीचर बनाया है। साधारण को, ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय की टीचर बनाया। आप अभी साधारण थोड़ेही हो, ईश्वरीय विश्व विद्यालय की टीचर्स हो। तो अपना नशा है? नशा माना खुशी। नशा आर्टीफिशियल नहीं है। उसकी खुशी है। अपने को कितने भाग्यवान समझते हैं, सवेरे उठते ही याद आता है वाह मेरा भाग्य! वाह मेरा बाबा! वाह मेरा परिवार। खुशी कितनी होती है। बाबा के बनने से क्या फर्क हुआ? शक्ल में सदा खुशी है। भगवान मेरा हो गया और क्या चाहिए! आपने अनुभव किया होगा, मेरा बाबा रीयल मन कहता है। कुछ भी हो मेरा बाबा कहो, बाबा हाज़िर! साथ देने वाला तो बाबा ही है। ब्रह्माकुमारी बने तो इन्ड तक कौन तुम्हारा साथी है? बाबा ही है। कोई बने न बने, लेकिन बाबा तो मेरा है ना! इतना नशा है ना! बाबा के सहारे आये हो। ब्रह्मा बाबा की ब्रह्माकुमारी हो तो वो पक्का है। बाबा साथ देने वाला है। भले कहीं भी रहे, बॉम्बे में रहे, चाहे कहीं भी रहे लेकिन बाबा मेरे

साथ है। मेरा हक है बाबा पर। ऐसे नहीं बाबा हमारा है लेकिन मेरा है। पर्सनल बाबा मेरा है। जितना मेरापन होगा उतनी बाबा की मदद मिलेगी। कोई भी काम करो पहले मेरा बाबा कहो। मेरेपन की जो खुशी है, मेरेपन का जो सहयोग है वो बाबा का बहुत है। कोई भी बात आये कौन याद आयेगा? आपके साथ रहने वाली या बाबा याद आयेगा? भले साथ रहने वाले मदद करते हैं लेकिन उन्हों को भी किसने निमित्त बनाया? बाबा ने बनाया ना! तो बाबा रग-रग में समाया हुआ होना चाहिए और बातें तो हैं ही। सेन्टर मिले, साथी मिलें, यह मिले, विजय होती है क्योंकि बाबा मेरे साथ है। अगर साथ है तो विजय है। तो बाबा मेरा है, ये चेक करो। हमारे दिल में पक्का है? हर समय याद आता है? मानो कोई चीज़ से आपका प्यार है तो वो कभी भूलती है? नेचुरल याद रहती है, आप याद करो न करो, याद आयेगी, ऐसे बाबा की रग-रग में याद हो। कोई भी बात हो मेरा बाबा। अगर बाबा हमारे साथ है, हम बेपरवाह बादशाह हैं। कोई भी बात में हमारी हार नहीं हो सकती, अगर बाबा साथ है तो बाबा से प्यार हो। ब्रह्माकुमारी बनना माना बाबा के प्यारे बनना। तो अपने आपसे पूछो ये फाउण्डेशन पक्का है? चलते-फिरते कोई भी बात हो बाबा याद आये। भले कोई बड़ी बहन भी साथी बनती है लेकिन उनको भी प्रेरणा देने वाला कौन? मेरा बाबा है। मेरापन लाओ। मेरा भूलता नहीं है। मेरा बाबा तो सभी जगह है ना! जिन्दगी का आधार ही बाबा है। भले बहन के पास रहती हो, लेकिन सम्भालने वाला कौन? बाबा। अपने दिल में देखो, दिल में मेरा बाबा समाया है? हमारा फाउण्डेशन क्या है? मेरा बाबा। ओम शान्ति

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

नव निर्माण के निमित्त बनना है तो ईश्वरीय मर्यादाओं का कंगन दृढ़ता से बांध लो

1) जैसे सारे विश्व में यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय अनकॉमन है क्योंकि इसको चलाने वाला चान्सलर ही अनकॉमन है। वह अलौकिक और पारलौकिक है। ऐसे अलौकिक, पारलौकिक बापदादा के हम सब स्टूडेण्ट भी अलौकिक हैं इसलिए हमारी जीवन भी अद्भुत निराली, वन्डरफुल और प्यारी है। दुनिया में सन्यासी अनेक, योगी अनेक, विद्वान अनेक, धार्मिक नेतायें अनेक, भौतिक बातों की रिसर्च करने वाले अनेक, परन्तु विश्व का नवनिर्माण करने वाली संस्था केवल एक है। अपनी जीवन का निर्माण करने वाले हम एक हैं। आप सब यहाँ आये हो नव निर्माण करने। आपका जिस दिन ज्ञान में नया जन्म हुआ – उसको कहते हैं न्यू बर्थ डे। जब से हम शिवबाबा के इस विद्यालय में दाखिल हुए वह तारीख ही हमारे अलौकिक बर्थ डे की तारीख है। उस घड़ी से हमारा सम्बन्ध अलौकिक बन गया। वृत्ति-वायब्रेशन भी अलौकिक हो गये।

2) ऐसी कोई युनिवर्सिटी नहीं जहाँ हर एक को ईश्वरीय मर्यादा के कंगन में बांधा जाए। यहाँ हमें वह कंगन बांधा गया। बापदादा का हमें यह-यह आदेश है, यह-यह नियम हैं। उस समय से ही हम सबने यह दृढ संकल्प लिया कि हमें अनेक आत्माओं का और स्वयं के जीवन का नव निर्माण करना है। तो निर्माण करने वालों को दृढ बनाने के लिए, महान बनाने के लिए, अपने को पक्का कंगन बांधने के लिए आप सब यहाँ आये हो।

3) मै जानना चाहती हूँ कि किसी की नईया बीच भंवर में रूक तो नहीं जाती? मेरी नईया की डोर खिवैया के हाथ में पक्की है? हम सब मुसाफिर हैं। नांव में बैठे हैं। हमें मजधार से पार करने वाला खिवैया है। डोरी उनके हाथ में है। वह कहता है नईया चलेगी, आंधी तूफान आयेंगे लेकिन घबराना नहीं। आंधी तूफानों से पार होने वाले का नाम है महावीर। अपना पांव नईया से मरने तक भी उतारना नहीं है। यह तो पक्का ही है। सवाल यह है कि अपनी अलौकिक जीवन पक्की है?

4) हम सभी अष्ट भुजाधारी हैं, हमारी अष्ट भुजाओं में अष्ट शस्त्र हैं। वह हैं अष्ट शक्तियाँ। तो चेक करो – मेरी भुजायें बराबर हर शस्त्र को पकड़े हुए हैं? कोई टूट फूट तो नहीं गया है? रोज़ अमृतवेले देखो हम अष्ट शस्त्रधारी हैं। अमृतवेले जैसे ताकत के लिए माज़ून खाते, वैसे सवेरे-सवेरे अपनी अष्ट शक्तियों को अपने पास दौड़ाओ। ऐसे भी नहीं कोई शक्ति ज्यादा और कोई कम हो। चेक करो सभी शक्तियाँ समान हैं या कम ज्यादा? कोई का पेच ढीला तो नहीं हैं? जैसे कार चलते-चलते खड़ी तभी होती जब पेट्रोल नहीं फेकती, कारण होता पेट्रोल में थोड़ी सी मिलावट। ऐसे ही अगर हमारे में थोड़ी भी कमजोरी है तो हम अलौकिक जीवन का आंनद नहीं ले सकते। जैसे बाबा ने कहा बच्चे स्वदर्शन चक्र चलाते हो या खुद चक्करों में आ जाते हो? तो देखो हमारी जीवन चकरी से निकल गई है? स्वदर्शन चक्र हमारे हाथ में है?

5) बाबा कहता – ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी माना संगम पर जीवनमुक्त अर्थात् संस्कारों से मुक्त। जो अब संस्कारों से मुक्त हैं वही मुक्ति जीवनमुक्ति पा सकते हैं। तो पहले चेक करो कि मैं सारे दिन में कितना समय मुक्त रहता हूँ? अपने संस्कारों से मेरी स्थिति मुक्त रहती है? या मैं वर्सा तो जीवनमुक्ति का ले रहा हूँ परन्तु अभी मैं संस्कारों के बन्धन में बंधा हुआ हूँ? अगर मैं संस्कारों के बन्धन में हूँ तो स्वतन्त्र नहीं परतन्त्र हूँ। यही चार्ट चेक करो – मैं लौकिक से निकल अलौकिक जीवन, अलौकिक

दुनिया निर्माण करने वाला, अलौकिक संस्कार वाला ब्रह्माकुमार हूँ या शुद्र कुमार हूँ?

6) मैं सर्व शक्तियों में स्वयं को समर्थ अनुभव करती हूँ? मेरी कोई शक्ति निर्बल तो नहीं है? स्व के अंलकार छोड़ मैं दूसरे को दोषी तो नहीं बनाती? इसने ऐसा किया तो मैंने किया, इसने बोला तो मैंने भी बोला। मै उसे कहती तुमने अपनी शक्ति क्या दिखाई! – बाबा ने कहा है – बच्चे तुम पुण्य आत्मा हो तो मेरे कदम-कदम से, खाने से, पीने से, बोलने से, चलने से सबसे पुण्य होता है? पुण्य करते-करते कोई पाप तो नहीं कर लेते हो जिससे सौगुणा दण्ड पड़ जाए?

7) मुझे सदा यही फुरना (फिकर) रहता – कि मुझसे ऐसा कोई व्यवहार वा बोल-चाल न हो जाए जो धर्मराज़ के आगे झुकना पड़े। यही मुझे डर है। बाकी मैं किससे डरती नहीं, दुश्मन मेरा रावण है। बाकी सब मित्र हैं। रावण को भी प्यार से कहती – ओ रावण अब तेरा राज्य पूरा हुआ। अब तू विदाई ले। उसे भी हम डांटकर नहीं भगाते। जब हम शीतल बन जाते तो वह आपेही चला जाता है। रावण बिचारा है, हम कोई बिचारे नहीं। अब तो उसका राज्य जा रहा है, मेरे बाबा का राज्य आ रहा है – इसलिए मुझे किसी से डर नहीं।

8) आज हरेक अपनी डायरी में नोट करो कि मैंने अपने पुराने संस्कारों से मुक्त होने का पाठ पक्का किया है? अगर किन्हीं संस्कारों के वश होते हैं तो वह जेल में बंधायमान हैं। जब कोई कहता मैं क्या करूँ, मेरे संस्कार हैं ना! तो मुझे उसके ऊपर बहुत तरस आता है। मैं कहती तुम इस सुहावने संगम की स्वर्णिम लॉटरी को क्यों खत्म करते हो? जब सहारा मेरा बाबा है, तो उसका सहारा छोड़ संस्कारों का सहारा क्यों लेते हो? उन्हें क्यों प्रधान बनाते? तुम लेके सहारा बाबा का इन सबको खत्म करो। जो अपने संस्कारों को बाबा के चरणों में सरेण्डर करता वही राजतिलक पाता है। संस्कारों को मार दो तो सब झगड़े समाप्त हो जायेंगे।

9) आपस में कभी-कभी विचार न मिलने के कारण पार्टीबाज़ी हो जाती है। आपस में किसी बात में मतभेद होगा – कहेंगे अच्छा दिखाऊंगा, बताऊंगा...अरे किसको दिखाओगे, बताओगे? मैने देखा है – थोड़ी भी रूची नहीं होगी तो कहेंगे जाओ – जाकर करो। खुद सो जाते, समझते मैं सहयोग दूँगा तो काम होगा। अगर नहीं दूँगा तो काम बन्द हो जायेगा। बिल्कुल ही बुद्धि विपरीत हो जाती है। बाबा कहते बच्चे संगम पर तुम्हें सर्वेन्ट बनकर रहना है। बाबा के सहयोगी हो तो किसी स्थान से ऐसी रिपोर्ट नहीं आनी चाहिए। न कभी पार्टीबाज़ी करो, न अपनी होशियारी दिखाओ, न शैतानी दिखाओ...बाबा के घर में किसकी भी बाह्यमुखता चल नहीं सकती। ऐसा जो करता वह चल नहीं सकता। आप अपने संस्कारों की होशियारी किसको दिखाते हो। बाबा को? ब्राह्मणों को?

10) बाबा ने हम सबको नाम दिया है – तुम हो विश्व के नव निर्माता। हम सब हैं अपनी जीवन का वा विश्व का नव निर्माण करने वाले। हम विश्व के निर्माता हैं। निर्माता माना माँ बनकर, मातृ स्नेही बनकर निर्माण करना इसलिए अपना चार्ट चेक करो। अष्ट शक्तियों को रोज़ देखो और अपनी शैतानियों को समाप्त करने का संकल्प करो। जब सब पुरानी आदतें समाप्त हों तब जयजयकार होगी।

11) पुरुषार्थ के लिए हर एक को अनेक सहज साधन मिले हैं। स्वतन्त्र रहकर सच्चे सन्यासी जीवन में रहना सीखो। कुमार तो अकेले रह सकते, अकेले सेवा में जा सकते। बुद्धि का दान दे सकते। कुमारों के ऊपर चिंता की चौरासी की टोपी नहीं। सबसे अधिक लक्की आप हो। बिल्कुल स्वतन्त्र हो। इसलिए 5 केला रोज़ खाओ, अकेले हो, अकेले में, अकेले बाप को याद करो। आपको सब सहज सेलवेशन मिली है। हंस हो तो एक बाबा को सखा बनाकर उनसे खेलो....इससे अकेले की भासना खत्म हो जायेगी। अकेले की फीलिंग भी फालतू की फीलिंग है। आप फ्री हो, कमाओ मौज़ करो, आपको कोई भी चिंता नहीं। कुमारी जीवन भी बन्धन की जीवन है। कुमारों का चोला बन्धन मुक्त चोला है। तन की शक्ति, मन की शक्ति, धन की शक्ति है।

12) आप बाबा के लक्की बच्चे हो। जहाँ कुमार हैं वह गुलदस्ता फलीभूत है। परन्तु पार्टीबाजी से मैं नमस्कार करती हूँ। पार्टीबाजी के संस्कार यहाँ छोड़कर जाओ। ईश्वरीय बन्धन का कंगन बांधो। यह जीवन हर्षित मुख रहने की है। हंसी-मज़ाक नहीं। हंसी-मज़ाक भी बड़ा नुकसान करती है। यह जीवन रूह-रूहान करने की है। फालतू बातें करने की नहीं इसलिए बैठकर आपस में रूह-रूहान करो। तेरी मेरी बातें करना, बैठकर एक दूसरे की कमियों का वर्णन करना, यह मर्यादा नहीं। बहन से अकेले में बैठकर बातें करना भी ब्राह्मणों की मर्यादा नहीं। जो इस मर्यादा की लकीर को छोड़ता, वह अपने स्वमान को छोड़ता है।

13) देह की आकर्षण भी विषैला सांप है। एक आकर्षण में आता, 100 पर दाग लगता। ऐसा दाग कभी भी न लगाओ। बाबा का यह स्ट्रिक आर्डर है। कई कहते हमें सेन्टर पर भोजन मिले। मैं कहती हूँ बाबा का घर सो तुम्हारा घर है। भोजन की बात नहीं लेकिन देखा गया है इससे हमारी ईश्वरीय मर्यादा टूटती है, इसलिए यह भी बन्धन है। कईयों को यह बन्धन बहुत कड़ा लगता। लेकिन यही बन्धन हमारे स्वमान को आगे बढ़ाने वाला है।

14) हमारा नियम है – जितना हम पवित्र भोजन खायें उतना अच्छा है, लेकिन कोई कुमार अपनी माँ के साथ रहे और कहे हम तो अपने हाथ से बनाकर खायेंगे – तो इससे बहुत बड़ी डिससर्विस होती है, झगड़ा पड़ता है। वैर विरोध करके ब्रह्माकुमारी संस्था का नाम बदनाम करो – ऐसी नौबत नहीं आनी चाहिए। जहाँ तक हो सके योग की शक्ति को बढ़ाओ, आदतों से मुक्त रहो। अच्छा – ओम् शान्ति।